प्रौढ़ सब्त स्कूल बाईबल अध्ययन गाईड

भण्डारीपनः हृदय के उद्देश्य

लेखक : जोन एच० एच० मैथ्यूज

जनवरी, फरवरी, मार्च
2018

विषय-सूची

पाठ	विषय	तिथि
	भूमिका	
1	दिसम्बर 30-जनवरी 5	भौतिकवाद का प्रभाव
2	जनवरी 6-12	मैं देखता हूँ, मैं चाहता हूँ मैं लेता हूँ
3	जनवरी 13-19	परमेश्वर या धन संपत्ति?
4	जनवरी 20-26	संसार के तौर-तरीके से बचें
5	जनवरी 27- फर. 2	अदन के बाद प्रबंधक (भण्डारी)
6	फरवरी 3-9	एक प्रबंधक (भण्डारी) के चिह्न
7	फरवरी 10-16	परमेश्वर के साथ सत्यनिष्ठा
8	फरवरी 17 - 23	दशमांश देने के प्रभाव
9	फर. 24-मार्च 2	कृतज्ञता की भेंट
10	मार्च 3-9	भण्डारीपन की भूमिका
11	मार्च 10-16	आभार: प्रतिदिन का संकल्प
12	मार्च 17-23	एक भण्डारी की आदतें
13	मार्च 24 - 30	भण्डारीपन के परिणाम

भूमिका
एक मसीही प्रबंधक (भण्डारी) का जीवन

मसीहियों के तौर पर हमें परिवर्तन की एक जरूरत को देखने से पहले हमें हमारे पापमय दशा को पहचानने की आवश्यकता है। वह परिवर्तन केवल और पूर्णरूपेन, मसीह हममें कार्य करने के द्वारा आ सकता है। हम में उसके कार्य की एक अभिव्यक्ति प्रबंधन के क्षेत्र में है। यद्यपि, प्रबंधन मसीही जीवन के विभिन्न पहलूओं को शामिल करता है, हम इसे अब परमेश्वर की महिमा के लिये वास्तविक और अवास्तविक अधिकारों के संचालन के विषय में व्याख्या करेंगे।

जैसा बाईबल में सिखाया जाता है, दूसरे चीजों के बीच में प्रबंधन भौतिकवाद के खतरों के खिलाफ एक सशक्त औजार बन जाता है (भौतिकवाद-चीजों को प्राप्त करने का प्रेम), अथवा सामान्यत: सांसारिकता-महानतम आत्मिक छलावा में से है जो शत्रु हमारे सामने रख देता है। बहुत से लोग इसे समझने में असफल हो जाते हैं कि दौलत और अधिकार सस्ते हैं, बनावटी मसाले हैं जो अंतत: अपना स्वाद खो देते हैं। दुर्भाग्यवश बहुत-सी आत्माएँ खो जाएँगी क्योंकि वे संसार के अपने प्रेम को तोड़ने में असफल होंगी। संसार के तौर तरीके- "शरीर की अभिलाषा, और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमंड" (1यूहन्ना 2:16)- हमारे जीवन में प्रबंधन के सिद्धांतों को जीने के द्वारा सब लचीले बनाये जा सकते हैं, इतना तक कि इन से दूर रहा जा सकता है।

यही वजह है इस त्रिमास हम भण्डारीपन के विषय, और यह हमें क्या सिखा सकता है। देखेंगे, कि परमेश्वर हमें किस प्रकार जीवन-जीने की इच्छा रखता है, इसके सारे प्रकटीकरण जो संसार के प्रेम से स्वतंत्रता को शामिल करता है। भण्डारीपन दैनिक यीशु के पीछे चलने की अभिव्यक्ति है यह परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम की अभिव्यक्ति है, सत्य को जीने का एक साध न जो हमें मसीह में दिया गया है। हम प्रबंधक हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें पहले प्रेम किया।

हमारा प्रबंधक का जीवन जीना तब हमारी प्रवृति, हृदय परिवर्तन,

जेनेरल कॉन्फ्रेन्स ऑफ सेवेन्थ-डे-ऐडवेंटिस्ट द्वारा तैयार पाठ का हिन्दी अनुवाद एवं मुद्रण, सब्बत स्कूल विभाग, पश्चिमी झारखण्ड सेक्शन ऑफ एस०डी०ए०,

मुद्रक : काथलिक प्रेस, राँची - 834001 (झारखण्ड)

समर्पण, आत्मअनुशासन, और बहुत-सी बातों को शामिल करता है।

हमें परमेश्वर का विश्वस्त और भरोसेमंद दास होना है, प्रत्येक चीज में हम करते और कहते हैं यीशु से संबद्ध रखने के द्वारा निस्वार्थ जीवन जीना है। मसीही विचारधारा में हम ढूँढ़ते हैं कि प्रबंधन का परिणाम धार्मिक जीवन की संतुष्टि है। हमें उसके कार्य को पूरा करने के लिये उसके मिशन में धन आपूर्ति (उपार्जन) करना, उसकी महिमा के लिये परमेश्वर के अधिकारों को संचालित करना सीखना है।

अभी परमेश्वर के प्रबंधकों को "दर्पण में धुंधला-सा दिखाई देता है" (1कुरि० 13:12), परन्तु यीशु स्पष्ट देखता है। वह हमें अपने कार्य को करने की जिम्मेदारी देता है। इतना तक कि संसार के प्रलोभन के उलझन के बदौलत हमें अभी भी हमारी प्रतिभाओं, आर्थिक व्यवस्थाओं, स्वास्थ्य, एवं पर्यावरण के सही संचालन की जिम्मेदारी है। ये पाठ हमें सिखाने के लिये सुसज्जित हैं कि प्रबंधक के तौर पर हमारी जिम्मेदारियाँ क्या हैं और परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उन जिम्मेदारियों को हम कैसे पूरी कर सकते हैं, यह उद्धार अर्जित करने की कोशिश के तौर पर नहीं वरन पहले ही फलस्वरूप इसे प्राप्त किया है।

मसीही प्रबंधकों के तौर पर हमारे जीवन परमेश्वर के चरित्र को संसार को प्रतिबिम्बित करते हैं। उनके जीवनों में सुंदरता आनंद और धार्मिकता है जो बाईबलीय सिद्धांतों के लिये खड़े होने का साहस करते हैं- खास कर हमारी संस्कृति की विचारधारा और तहज़ीब के विरुद्ध। हर कोई अधार्मिकता का जीवन जीने को लुभाया जाता है; खुले और सूक्ष्म तरीके से परीक्षाएँ हमारे चारों ओर हैं। मसीहियों के तौर पर, खासकर मसीही प्रबंधकों के तौर पर, हमें इन परीक्षाओं से बचने के तरीके ही नहीं दिखाये गये हैं वरन ऐसा करने की सामर्थ्य की भी प्रतिज्ञा की गई है।

चरम अंत में, हम दो विचारों में से एक को सुनने जा रहे हैं जो हमें कहा गया है: "मैंने तुम को कभी नहीं जाना हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास चले आओ।" (मत्ती 7:23) या "धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो!" (मत्ती 25:23)।

यह हमारी आशा और प्रार्थना है कि इस त्रिमास में प्रबंधन के विषय जो सिखलाया गया है उस रास्ते में बने रहने में मदद करेगा जो सचमुच इन वचनों को चरितार्थ करेगा, "अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो" वचन जो हम निश्चित रूप से सुनेंगे।

जोन एच०एच० मैथ्यूज एण्ड्रूज विश्वविद्यालय से डी०मिन० की उपाधि प्राप्त की है। वह एक अभिषिक्त पादरी है जिसने फ्लोरिडा, अल्बामा, आइयोवा, मिसोरी, टेनेसी, और नेब्रास्का में सेवकाई का कार्य किया है। अभी वह उत्तरी अमेरिकी विभाग में भण्डारीपन सेवकाई निदेशक हैं।